❖ तीन-चार माह में पशु का पेट फूला नजर आने लगता है ।

❖ पशु की गुदा में हाथ डाल कर बच्चेदानी का दो में से एक हार्न का बढ़ा होना महसूस किया जा सकता है ।

10. पशुओं की संक्रामक बीमारियों से रक्षा : पशुओं में संक्रामक रोगों का कारण अनेक प्रकार के जीवाणु व विषाणु है । जिनसे रक्षा के लिए तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए । संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए निम्न बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं :-

☞ पशुओं को समय-समय पर चिकित्सक के परामर्श के अनुसार बचाव के टीके लगवा देने चाहिए ।

☞ पशु खरीदते समय ध्यान रखें कि वह उस क्षेत्र से नहीं खरीदा जाए जहां संक्रामक रोग हो रहा हो ।

☞ रोगी पशु को स्वस्थ पशु से तुरन्त अलग कर दें और उस पर अच्छी निगरानी रखें ।

☞ रोगी पशु के सम्पर्क में स्वस्थ पशु को न आने दें ।

☞ रोगी पशु का गोबर, मूत्र व जेर आदि को बाहर किसी गढ्ढे में दबा कर उस पर चूना डाल दें ।

☞ मरे रोगी पशु को जला दें या कहीं दूर 6-8 फुट गहरे गढ्ढे में दबा कर उस पर चूना डाल दें ।

☞ रोगी पशु का दूध, मांस आदि का प्रयोग न करें ।

☞ पशुशाला के मुख्य दरवाजे के पास 'फुट-बाथ' बनवाएं ताकि खुरों द्वारा लाए गये कीटाणुओं को दवाई के घोल से नष्ट किया जा सके ।

☞ पशुशाला की सफाई नियमित तौर पर लाल दवाई या फिनाईल से करें।

☞ पशुओं पर किसी प्रकार के चिचड़ी जूं आदि रहने नहीं देने चाहिए । मक्खी-मच्छरों को भी दवाई छिड़क कर नियन्त्रित करें ।

☞ पशु बीमार होने पर तुरन्त स्थानीय पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार करवाएं ।

आलेख
डॉ. आलोक कुमार शर्मा
सह प्राध्यापक

पशुओं के लिए उपयोगी दैनिक कार्यकलाप

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान प्रसार विभाग
पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

पशुओं के लिए उपयोगी दैनिक कायकलाप

1. **खरहरा करना** : इसके निम्न लाभ होते हैं :-
   - ❖ खून का सँचार (दौरा) बढ़ना, जिससे पशु का स्वास्थय अच्छा रहता है ।
   - ❖ दुग्ध उत्पादन बढ़ता है ।
   - ❖ नियमित रूप के स्वास्थय का पता लगता रहता है ।
   - ❖ यदि किसी दिन चोट, चर्मरोग, किलनी या जोंक इत्यादि पाई जाए तो समय रहते उसका इलाज हो सकता है ।
   - ❖ दूध निकालने से पहले पशु की बाहरी सफाई हो जाती है । अत: स्वच्छ दूध का उत्पादन होता है ।

2. **पशुशाला की धुलाई** : पशुशाला को हर रोज पानी से झाड़ू द्वारा साफ कर देना चाहिए । इससे गोबर व मूत्र की गन्दगी दूर हो जाती है । पानी से धोने के बाद एक बाल्टी पानी में 5 ग्राम लाल दवाई(पोटाशियम परमैंगनेट) या 50 मिली लीटर फिनाईल डाल कर धोना चाहिए । इससे जीवाणु, जूं किलनी तथा विषाणु इत्यादि मर जाते हैं, पशुओं की बीमारियां नहीं फैलती और स्वच्छ दूध उत्पादन में मदद मिलती है ।

3. **नहलाना** : संकर पशु ठण्ड़ी जलवायु पसन्द करते है । इसलिए गर्मियों के मौसम में संकर पशुओं को प्रतिदिन एक या दो बार स्वच्छ पानी से नहलाना चाहिए । इससे दुग्ध उत्पादन की बढ़ोतरी होती है । पशुओं की शारीरिक सफाई हो जाती है । पशुओं में रोग व बीमारियाँ कम लगती हैं और किलनी, जूं व टूटे बाल इत्यादि दूध में नहीं गिरते । अत: स्वच्छ दुग्ध उत्पादन में मदद मिलती है ।

4. **व्यायाम कराना** : पशुओं को नियमित तौर से व्यायाम अथवा अभ्यास कराने के कई निम्न लाभ होते है ।
   - ❖ पशु को स्वास्थय अच्छा रहता है ।
   - ❖ पाचन में सुविधा रहती है ।
   - ❖ रक्त संचार बढ़ता है ।
   - ❖ दुग्ध उत्पादन बढ़ता है ।
   - ❖ ग्याभिन गायों/बछड़ियों में ब्याते समय सुविधा रहती है ।

5. **खुर की बीमारियों से बचाव** : इसके लिए पशु बाड़े के मुख्य दरवाजे पर एक ओर एक फुट गहरा, चन्द्राकार गड्ढा बना कर उसके फर्श व दीवारों को सीमेंट या चूने से पक्का करवा लेना चाहिए । इसमें फिनाईल या लाल दवाई (पोटाशियम परमैंगनेट) का घोल डाल कर रखना चाहिए ताकि पशुशाला में आते-जाते समय पशुओं के खुरों पर इसका असर हो सके । ऐसा करने से खुरों द्वारा फैलने वाली गन्दगी (गोबर, मूत्र, कीचड़ आदि) की सफाई हो जाती है । इससे खुरों की बिमारियों के बचाव के इलावा स्वच्छ दुग्ध के उत्पादन में मदद मिलती है ।

6. **समय पर दूध निकालना** : अधिक दूध देने वाले संकर पशुओं से दिन में तीन बार दूध निकालना चाहिए और दूध निकालने के समय में बराबर का अन्तर होना चाहिए। अगर पशु कम दूध देता है तो दो बार (सुबह और शाम को) दूध निकालना उचित है, लेकिन इसके बीच भी बराबर समय होना चाहिए। इससे दूध का उत्पादन बढ़ता है और निश्चित समय पर पशु स्वयं दूध निकनवाने के लिए तैयार हो जाता है ।

7. **पशुओं को सुखाना** : ग्याभिन अवस्था में पशु और बच्चे दोनों को अधिक खुराक की आवश्यकता होती है । अत: ब्याने से तीन माह पहले ही पशु का दूध निकालना बन्द कर देना चाहिए, ताकि अगले ब्यान्त में भी भरपूर दूध मिल सके। इससे पशु व बच्चे का स्वास्थय भी ठीक रहता है और पोषण की कमी की बीमारियाँ भी नहीं लगतीं ।

8. **पशुओं की गर्मी का पता लगाना** : पशुओं की गर्मी का पता निम्न लक्षणों से लग सकता है :-
   - ❖ पशु की योनि से सफेद लेसदार पदार्थ निकलता है ।
   - ❖ पशु की योनि अन्दर से लाल हो जाती है और उसमें सोजिश आ जाती है।
   - ❖ पशु बार-बार पूंछ उठाता है, रम्भाता है और बार-बार पेशाब करता है।
   - ❖ 'टीजर बुल' या सांड के द्वारा भी गर्मी में आये पशु का पता लगाया जा सकता है ।

9. **ग्याभिन पशु की पहचान** : निम्न लक्षणों से ग्याभिन पशु की पहचान की जा सकती है ।
   - ❖ ग्याभिन होने पर पशु दोबारा 20-21 दिन बाद गर्मी में नहीं आती ।